International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 01(III) (Special Issue), January- March, 2026, pp. 61-68

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के संदर्भ में भारत की विदेश नीति : 21वीं सदी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

बलराम*

शोधार्थीए राजनीति विज्ञान विभागए जयनारायणव्यास विश्वविद्यालयए जोधपुरए राजस्थान।

*Corresponding Author: barampanwar1511@gmail.com

सार

21वीं सदी में विश्व राजनीति में बड़े स्तर पर परिवर्तन देखने को मिले हैं। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद कुछ समय तक विश्व में एकध्रुवीय व्यवस्था रही, लेकिन धीरे–धीरे अनेक शक्तिशाली देशों के उभार के कारण बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का विकास हुआ। इस बदलती वैश्विक स्थिति का सीधा प्रभाव भारत की विदेश नीति पर पड़ा है। भारत की विदेश नीति अब पहले जैसी सीमित और रक्षात्मक न रहकर अधिक सक्रिय, व्यावहारिक और रणनीतिक बन गई है। 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति अधिक लचीली, व्यावहारिक और राष्ट्रीय हितों पर केंद्रित हो गई है। वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण, सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उदय ने भारत की विदेश नीति को एक नया और व्यापक स्वरूप प्रदान किया है। बीते लगभग दो दशकों में यह परिवर्तन केवल नीतियों तक सीमित न रहकर भारत की समग्र विदेश नीति की सोच और दृष्टिकोण में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

शब्दकोशः *बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, भारत की विदेश नीति, रणनीतिक स्वायत्तता, बहु–संरेखण, वैश्विक राजनीति।*

प्रस्तावना

शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति में ऐसे व्यापक और गहरे परिवर्तन देखने को मिले, जिन्होंने विश्व व्यवस्था की प्रकृति को ही बदलकर रख दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लगभग चार दशकों तक विश्व राजनीति द्विध्रुवीय व्यवस्था पर आधारित रही, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ दो प्रमुख महाशक्तियों के रूप में उभरे। इस काल में अंतरराष्ट्रीय संबंध विचारधाराओं, सैन्य गठबंधनों और शक्ति–संतुलन की राजनीति से संचालित होते थे। किंतु 1991 में सोवियत संघ के विघटन के साथ यह द्विध्रुवीय व्यवस्था समाप्त हो गई और विश्व राजनीति एक नए दौर में प्रवेश कर गई।

शीतयुद्ध के बाद के प्रारंभिक वर्षों में विश्व राजनीति में एकध्रुवीय व्यवस्था का प्रभुत्व स्थापित हुआ, जिसमें अमेरिका एकमात्र महाशक्ति के रूप में उभरा। राजनीतिक, सैन्य, आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रों में अमेरिका की श्रेष्ठता स्पष्ट दिखाई देने लगी। इस काल में यह धारणा प्रबल हुई कि विश्व व्यवस्था अब स्थायी रूप से एकध्रुवीय हो जाएगी। परंतु समय के साथ यह स्पष्ट हो गया कि एकध्रुवीय व्यवस्था न तो स्थायी है और न ही संतुलित। 21वीं सदी के आरंभिक दशकों में अनेक नई शक्तियों के उभार, क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका में वृद्धि और वैश्विक आर्थिक संरचना में बदलाव के कारण विश्व धीरे–धीरे बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर अग्रसर होने लगा।[1]

Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.

****A Special Issue for the papers accepted for publication in the International Multidisciplinary Conference on India's Foreign Policy and International Relations:A Future Roadmap (IFPIR-2026) (Hybrid Mode)(22-24 January 2026) Organized by Geo-Politics & Defence Study Research Cell, Faculty of Arts, Education and Social Sciences, Jai Narain Vyas University, Jodhpur, Rajasthan.***

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था वह संरचना है जिसमें शक्ति का केंद्रीकरण किसी एक देश तक सीमित न होकर अनेक देशों और क्षेत्रों में विभाजित होता है। चीन का तीव्र आर्थिक और सैन्य उभार, रूस की पुनः सक्रिय भूमिका, यूरोपीय संघ का सामूहिक प्रभाव, जापान और दक्षिण कोरिया जैसी एशियाई शक्तियों की भूमिका तथा भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका जैसे उभरते देशों की बढ़ती उपस्थिति ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति को बहुध्रुवीय स्वरूप प्रदान किया है। इसके साथ ही वैश्विक दक्षिण के देशों ने भी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी आवाज को अधिक मुखर किया है।इस बदलती विश्व व्यवस्था में अंतरराष्ट्रीय संबंध पहले की तुलना में अधिक जटिल हो गए हैं। अब विश्व राजनीति केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रही, बल्कि आर्थिक शक्ति, तकनीकी क्षमता, ऊर्जा संसाधन, साइबर सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और वैश्विक स्वास्थ्य जैसे मुद्दे भी उतने ही महत्वपूर्ण हो गए हैं। इस जटिल अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में प्रत्येक देश को अपनी विदेश नीति को नए सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता महसूस हुई है। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा।

भारत की विदेश नीति स्वतंत्रता के बाद से ही कुछ बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित रही है। गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, उपनिवेशवाद–विरोध, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और नैतिक आदर्शवाद भारतीय विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ रही हैं। शीतयुद्ध काल में गुटनिरपेक्ष नीति ने भारत को महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा से दूर रहते हुए स्वतंत्र निर्णय लेने की सुविधा प्रदान की। यह नीति भारत की संप्रभुता की रक्षा और विकासशील देशों के बीच नेतृत्व स्थापित करने में सहायक सिद्ध हुई।21वीं सदी में भारत ने स्वयं को केवल एक क्षेत्रीय शक्ति तक सीमित न रखकर एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है। तेज आर्थिक विकास, विशाल जनसंख्या, लोकतांत्रिक व्यवस्था, तकनीकी प्रगति और बढ़ती सैन्य क्षमता ने भारत को वैश्विक राजनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। इस नई भूमिका के अनुरूप भारत की विदेश नीति भी अधिक सक्रिय, संतुलित और लक्ष्य–केन्द्रित बनती गई है।[2]

रणनीतिक स्वायत्तता 21वीं सदी की भारतीय विदेश नीति का एक प्रमुख आधार बनकर उभरी है। इसका अर्थ है कि भारत किसी एक शक्ति या गठबंधन पर निर्भर हुए बिना अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सके। इसके साथ ही भारत ने बहु–संरेखण की नीति अपनाई है, जिसके अंतर्गत वह एक साथ अनेक देशों और संगठनों के साथ सहयोगपूर्ण संबंध बनाए रखता है। यह नीति भारत को बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में संतुलन बनाए रखने और अपने हितों की रक्षा करने में सहायता प्रदान करती है।आर्थिक कूटनीति भी 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम बन गई है। विदेश नीति अब केवल राजनीतिक और सुरक्षा मुद्दों तक सीमित नहीं रही, बल्कि व्यापार, निवेश, ऊर्जा सुरक्षा और तकनीकी सहयोग जैसे विषय भी इसके केंद्र में आ गए हैं। इसके साथ–साथ भारत ने अपनी सांस्कृतिक विरासत, योग, आयुर्वेद, लोकतांत्रिक मूल्यों और प्रवासी भारतीयों के माध्यम से सॉफ्ट पावर को भी प्रभावी कूटनीतिक साधन के रूप में अपनाया है।

इस प्रकार, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उदय ने भारत की विदेश नीति को नई दिशा और नया स्वरूप प्रदान किया है। भारत अब अंतरराष्ट्रीय राजनीति में केवल प्रतिक्रियात्मक भूमिका निभाने वाला देश नहीं रहा, बल्कि वैश्विक मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभाने और समाधान प्रस्तुत करने वाला एक महत्वपूर्ण अभिनेता बनकर उभरा है।[3]

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका

उभरती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। 21वीं सदी में वैश्विक शक्ति–संतुलन में आए परिवर्तनों ने भारत के लिए नए अवसर और नई जिम्मेदारियाँ दोनों उत्पन्न की हैं। भारत अब केवल एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में देखा जाने लगा है, जो अंतरराष्ट्रीय राजनीति, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर प्रभावी भूमिका निभाने की क्षमता रखती है।

इस नई बहुध्रुवीय व्यवस्था में भारत ने अपनी विदेश नीति को अधिक सक्रिय और व्यावहारिक बनाया है। भारत ने यह स्वीकार किया है कि बदलती वैश्विक परिस्थितियों में केवल गुटनिरपेक्षता पर्याप्त नहीं है। इसलिए भारत ने रणनीतिक स्वायत्तता को अपनाते हुए विभिन्न शक्तिकेंद्रों के साथ संतुलित संबंध स्थापित करने की नीति अपनाई है। इसका उद्देश्य यह है कि भारत किसी एक देश या गुट पर निर्भर हुए बिना अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार स्वतंत्र निर्णय ले सके।भारत की भूमिका बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में केवल द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि बहुपक्षीय मंचों पर भी उसकी सक्रिय भागीदारी देखने को मिलती है। अंतरराष्ट्रीय संगठनों और वैश्विक मंचों पर भारत ने विकासशील देशों की समस्याओं, आर्थिक असमानता, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और वैश्विक शांति जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया है। इससे भारत की छवि एक जिम्मेदार और रचनात्मक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरी है।इसके साथ ही, भारत ने आर्थिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर के माध्यम से भी अपनी भूमिका को मजबूत किया है। वैश्विक व्यापार, निवेश, तकनीकी सहयोग और विकास सहायता के माध्यम से भारत ने कई देशों के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ किया है। योग, संस्कृति, लोकतांत्रिक मूल्य और प्रवासी भारतीय समुदाय भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए हैं, जिससे भारत का वैश्विक प्रभाव और स्वीकार्यता बढ़ी है।[4]

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यह व्यवस्था संतुलन और सहयोग पर आधारित होती है। भारत ने स्वयं को न तो किसी एक महाशक्ति के पूर्ण सहयोगी के रूप में प्रस्तुत किया है और न ही टकराव की राजनीति को प्राथमिकता दी है। इसके बजाय भारत ने संवाद, सहयोग और संतुलन के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अपनी स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया है।इस प्रकार, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था ने भारत को अपनी विदेश नीति के माध्यम से वैश्विक राजनीति में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर प्रदान किया है। भारत की भूमिका अब केवल एक नीति–अनुसरण करने वाले देश की नहीं रही, बल्कि वह अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को आकार देने वाले महत्वपूर्ण देशों में शामिल होता जा रहा है। यही कारण है कि 21वीं सदी में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और भारत की विदेश नीति के बीच गहरा और प्रत्यक्ष संबंध देखने को मिलता है।

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति का रणनीतिक रूपांतरण

स्वतंत्रता के बाद से भारत की विदेश नीति का आधार गुटनिरपेक्षता रहा है। शीतयुद्ध काल में गुटनिरपेक्ष नीति का उद्देश्य अमेरिका और सोवियत संघ जैसे दो महाशक्ति गुटों से दूरी बनाए रखते हुए स्वतंत्र निर्णय–क्षमता को सुरक्षित रखना था। यह नीति उस समय की अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में भारत के लिए उपयोगी सिद्ध हुई और उसने भारत को वैश्विक राजनीति में एक नैतिक तथा शांतिप्रिय राष्ट्र की पहचान दिलाई। किंतु शीतयुद्ध की समाप्ति और एकध्रुवीय तथा बाद में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उदय के साथ यह स्पष्ट हो गया कि केवल गुटनिरपेक्षता 21वीं सदी की बदलती वैश्विक वास्तविकताओं से निपटने में पर्याप्त नहीं है। इसी संदर्भ में भारत की विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता की अवधारणा उभरकर सामने आई।[5]

रणनीतिक स्वायत्तता के साथ–साथ 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू बहु–संरेखण (डनसजप– ।सपहदउमदज) की नीति है। बहु–संरेखण का तात्पर्य यह है कि भारत एक साथ अनेक देशों और शक्ति–केंद्रों के साथ सहयोगपूर्ण संबंध बनाए रखता है। भारत ने अमेरिका, रूस, यूरोपीय संघ, जापान, आसियान देशों, मध्य एशिया, पश्चिम एशिया और अफ्रीकी देशों के साथ समानांतर रूप से रणनीतिक, आर्थिक और कूटनीतिक साझेदारियाँ विकसित की हैं। यह नीति बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की वास्तविकताओं के अनुकूल है, क्योंकि इसमें किसी एक शक्ति के प्रभुत्व को स्वीकार करने के बजाय संतुलन और सहयोग को प्राथमिकता दी जाती है।बहु–संरेखण की नीति ने भारत को वैश्विक राजनीति में अधिक लचीलापन प्रदान किया है। भारत विभिन्न देशों के साथ अपने हितों के अनुसार सहयोग कर सकता है और आवश्यकता पड़ने पर अपने रुख में परिवर्तन भी कर सकता है। इससे भारत की सौदेबाजी की क्षमता बढ़ी है और वह अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपने हितों को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर पा रहा है। बहु–संरेखण ने भारत को यह अवसर दिया है कि वह

वैश्विक शक्ति–संतुलन में एक संतुलनकारी भूमिका निभा सके, जो बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति का रणनीतिक रूपांतरण केवल राजनीतिक और सुरक्षा मामलों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आर्थिक कूटनीति इसके केंद्र में आ गई है। वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के बाद यह स्पष्ट हो गया कि किसी भी देश की अंतरराष्ट्रीय स्थिति उसकी आर्थिक शक्ति और विकास क्षमता से गहराई से जुड़ी होती है। इसी कारण भारत की विदेश नीति में वैश्विक व्यापार, विदेशी निवेश, ऊर्जा सुरक्षा, तकनीकी सहयोग और वैश्विक आपूर्ति–श्रृंखला जैसे विषयों को विशेष महत्व दिया गया है। भारत ने अपनी विदेश नीति को आर्थिक विकास के एक प्रभावी साधन के रूप में प्रयोग करना शुरू किया है।आर्थिक कूटनीति के माध्यम से भारत ने विभिन्न देशों के साथ व्यापार समझौते किए, निवेश आकर्षित किया और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा दिया। इससे न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को लाभ हुआ, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी विश्वसनीयता और स्वीकार्यता भी बढ़ी है। 21वीं सदी में भारत ने यह समझ लिया है कि आर्थिक शक्ति ही दीर्घकालिक राजनीतिक और सामरिक प्रभाव का आधार बनती है। इसी कारण भारत की विदेश नीति अब विकास–केंद्रित और भविष्य–उन्मुख दृष्टिकोण को अपनाती हुई दिखाई देती है।[6]

इसके अतिरिक्त, 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति में क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों पर सक्रिय भागीदारी भी एक महत्वपूर्ण रणनीतिक परिवर्तन के रूप में उभरी है। भारत अब केवल द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से वैश्विक निर्णय–प्रक्रिया में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहा है। भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक आर्थिक असमानता, विकासशील देशों की समस्याएँ और वैश्विक शांति जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया है। इससे भारत की छवि एक जिम्मेदार और रचनात्मक वैश्विक शक्ति के रूप में सुदृढ़ हुई है।बहुपक्षीय कूटनीति के माध्यम से भारत ने यह प्रयास किया है कि वैश्विक शासन व्यवस्था अधिक समावेशी और संतुलित बने। भारत ने विकासशील और वैश्विक दक्षिण के देशों की आवाज को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मजबूती से प्रस्तुत किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत केवल अपने हितों तक सीमित न रहकर वैश्विक समस्याओं के समाधान में भी योगदान देना चाहता है। यह दृष्टिकोण भारत की विदेश नीति को नैतिकता और व्यावहारिकता के संतुलन पर आधारित बनाता है।[7]

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति का विस्तार है। भारत ने यह समझा है कि केवल सैन्य और आर्थिक शक्ति ही अंतरराष्ट्रीय प्रभाव का आधार नहीं होती, बल्कि सांस्कृतिक आकर्षण, मूल्य और विश्वास भी उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं। भारत ने अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, योग, आयुर्वेद, लोकतांत्रिक मूल्यों, शिक्षा और प्रवासी भारतीय समुदाय को विदेश नीति के प्रभावी साधन के रूप में अपनाया है।सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से भारत ने अनेक देशों के साथ सकारात्मक और मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित किए हैं। योग और भारतीय संस्कृति की वैश्विक लोकप्रियता ने भारत की सॉफ्ट पावर को मजबूत किया है और उसकी अंतरराष्ट्रीय छवि को सकारात्मक बनाया है। प्रवासी भारतीय समुदाय ने भी भारत और अन्य देशों के बीच सेतु की भूमिका निभाई है, जिससे भारत की विदेश नीति को अतिरिक्त मजबूती मिली है। सॉफ्ट पावर ने भारत की विदेश नीति को केवल शक्ति–आधारित न रखकर विश्वास और सहयोग–आधारित बनाया है।

समग्र रूप से देखा जाए तो 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति का रणनीतिक रूपांतरण भारत को एक अधिक आत्मविश्वासी, व्यावहारिक और प्रभावशाली वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करता है। यह रूपांतरण भारत को बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने, वैश्विक चुनौतियों का सामना करने और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने में सक्षम बनाता है। भारत की विदेश नीति अब प्रतिक्रियात्मक नहीं, बल्कि सक्रिय, संतुलित और दूरदर्शी बन चुकी है, जो 21वीं सदी की वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप है।[8]

20वीं एवं 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति में तुलनात्मक परिवर्तन

भारत की विदेश नीति का विकास ऐतिहासिक परिस्थितियों, अंतरराष्ट्रीय परिवेश तथा राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर होता रहा है। 20वीं सदी और 21वीं सदी के बीच भारत की विदेश नीति में केवल प्राथमिकताओं का परिवर्तन ही नहीं, बल्कि उसके वैचारिक आधार, नीति–निर्माण की दिशा और कूटनीतिक कार्यशैली में भी महत्वपूर्ण संरचनात्मक बदलाव परिलक्षित होते हैं। जहाँ 20वीं सदी में भारत की विदेश नीति स्वतंत्रता–प्राप्ति के उपरांत संप्रभुता की रक्षा, राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण और शीतयुद्धकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति से गहराई से प्रभावित थी, वहीं 21वीं सदी में यह नीति वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और राष्ट्रीय हितों पर आधारित व्यावहारिक दृष्टिकोण की ओर उन्मुख हो गई है।

20वीं सदी में भारत की विदेश नीति का स्वरूप एक नवस्वतंत्र राष्ट्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और तत्कालीन वैश्विक परिस्थितियों से निर्धारित हुआ। औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के पश्चात भारत के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती अपनी राजनीतिक संप्रभुता को सुरक्षित रखना, अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्वतंत्र पहचान स्थापित करना तथा शीतयुद्ध के दौरान महाशक्तियों की वैचारिक और सामरिक प्रतिस्पर्धा से स्वयं को अलग रखना था। इसी संदर्भ में गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति का केंद्रीय सिद्धांत बनी। भारत ने शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, उपनिवेशवाद–विरोध, अंतरराष्ट्रीय नैतिकता और विश्व शांति जैसे आदर्शों को अपनी विदेश नीति की आधारशिला बनाया। इस कालखंड में भारत की विदेश नीति अपेक्षाकृत आदर्शवादी, सिद्धांत–प्रधान तथा सुरक्षा–केंद्रित दृष्टिकोण से संचालित रही।[9]

इसके विपरीत, 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति का स्वरूप अधिक यथार्थवादी, सक्रिय और रणनीतिक बनकर उभरा है। शीतयुद्ध की समाप्ति, वैश्वीकरण की तीव्र प्रक्रिया, आर्थिक उदारीकरण तथा बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उदय ने भारत को अपनी विदेश नीति की पुनर्समीक्षा करने के लिए विवश किया। इस दौर में भारत ने पारंपरिक गुटनिरपेक्षता की अवधारणा से आगे बढ़ते हुए रणनीतिक स्वायत्तता को अपनाया, जिसका उद्देश्य विभिन्न देशों और शक्ति–केंद्रों के साथ सहयोग बनाए रखते हुए राष्ट्रीय हितों के अनुरूप स्वतंत्र निर्णय–क्षमता को सुनिश्चित करना रहा। 21वीं सदी की विदेश नीति में भारत ने राष्ट्रीय हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करते हुए अधिक परिणामोन्मुख और व्यावहारिक कूटनीति को अपनाया है।[10]

आर्थिक आयाम के संदर्भ में भी 20वीं और 21वीं सदी की भारत की विदेश नीतियों में स्पष्ट अंतर दृष्टिगोचर होता है। 20वीं सदी में भारत की विदेश नीति में आर्थिक पक्ष अपेक्षाकृत सीमित रहा। आत्मनिर्भरता और संरक्षणवादी आर्थिक नीतियों के कारण भारत का वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ाव सीमित था। इसके विपरीत, 21वीं सदी में आर्थिक कूटनीति भारत की विदेश नीति का एक केंद्रीय स्तंभ बन गई है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार, विदेशी निवेश, ऊर्जा सुरक्षा, तकनीकी सहयोग तथा वैश्विक आपूर्ति–श्रृंखला में सक्रिय भागीदारी अब भारत की विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य बन चुके हैं। इसके परिणामस्वरूप भारत की वैश्विक पहचान एक उभरती आर्थिक शक्ति के रूप में सुदृढ़ हुई है।

सुरक्षा और सामरिक दृष्टिकोण से भी दोनों सदियों की विदेश नीतियों में मौलिक अंतर दिखाई देता है। 20वीं सदी में भारत की सुरक्षा नीति मुख्यतः रक्षात्मक रणनीति और क्षेत्रीय संतुलन तक सीमित थी। इसके विपरीत, 21वीं सदी में भारत की सुरक्षा नीति अधिक व्यापक और बहुआयामी हो गई है, जिसमें आतंकवाद–रोधी रणनीतियाँ, समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा तथा रणनीतिक साझेदारियों को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। साथ ही, भारत ने क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों पर अपनी सामरिक और सैन्य भूमिका को भी अधिक सशक्त किया है।इस प्रकार, तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो 20वीं सदी की भारत की विदेश नीति जहाँ आदर्शवाद, गुटनिरपेक्षता और नैतिक नेतृत्व पर आधारित थी, वहीं 21वीं सदी की विदेश नीति व्यावहारिकता, रणनीतिक स्वायत्तता और बहु–संरेखण की दिशा में विकसित हुई है। यद्यपि दोनों कालखंडों की विदेश नीतियाँ अपने–अपने ऐतिहासिक संदर्भों और परिस्थितियों के अनुरूप थीं, तथापि 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति अधिक लचीली, बहुआयामी

और वैश्विक भूमिका–उन्मुख बनकर उभरी है, जो भारत को बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में एक प्रभावशाली अंतरराष्ट्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में अग्रसर करती है।[11]

चुनौतियाँ

- बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अमेरिका, चीन, रूस और यूरोपीय संघ जैसी महाशक्तियों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है। इस स्थिति में भारत के लिए इन सभी शक्तियों के साथ संतुलित और सहयोगपूर्ण संबंध बनाए रखना एक अत्यंत जटिल चुनौती बन गया है।
- 21वीं सदी में चीन का तेज आर्थिक, सैन्य और तकनीकी विस्तार भारत के लिए एक प्रमुख रणनीतिक चुनौती बनकर उभरा है। एशिया में क्षेत्रीय प्रभाव बढ़ाने की चीन की नीति और सीमा से जुड़े विवाद भारत की सुरक्षा और विदेश नीति पर निरंतर दबाव डालते हैं।
- भारत के समक्ष सीमा–पार आतंकवाद, क्षेत्रीय अस्थिरता और आंतरिक सुरक्षा से जुड़े खतरे लगातार बने हुए हैं। पड़ोसी क्षेत्रों में राजनीतिक अस्थिरता और आतंकवादी गतिविधियाँ भारत की विदेश नीति और सुरक्षा रणनीति को प्रभावित करती हैं।[12]
- यद्यपि भारत एक उभरती आर्थिक शक्ति है, फिर भी वह विकासशील देश है और उसके सामने आंतरिक विकास से जुड़ी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं। गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी समस्याओं के समाधान के लिए बड़े संसाधनों की आवश्यकता होती है। साथ ही, वैश्विक स्तर पर प्रभावी भूमिका निभाने के लिए आर्थिक और रणनीतिक संसाधनों की भी आवश्यकता होती है।
- वैश्विक आर्थिक मंदी, व्यापार युद्ध, ऊर्जा संकट और आपूर्ति–श्रृंखला में आने वाली बाधाएँ भारत की आर्थिक कूटनीति के लिए गंभीर चुनौती उत्पन्न करती हैं। बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में वैश्विक अर्थव्यवस्था अधिक अस्थिर और प्रतिस्पर्धात्मक हो गई है।
- 21वीं सदी में तकनीक अंतरराष्ट्रीय शक्ति का एक प्रमुख आधार बन चुकी है। उन्नत तकनीकों के क्षेत्र में कुछ देशों पर निर्भरता भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के लिए चुनौती उत्पन्न करती है। इसके साथ ही, साइबर सुरक्षा से जुड़े खतरे भी भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति के लिए एक नई चुनौती के रूप में उभरे हैं।
- जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था, कृषि, ऊर्जा सुरक्षा और सामाजिक संरचना को प्रभावित कर रहे हैं।
- अंतरराष्ट्रीय संगठनों और बहुपक्षीय संस्थाओं की निर्णय–प्रक्रिया अक्सर धीमी, जटिल और सहमति–आधारित होती है। भारत के लिए यह चुनौती है कि वह इन मंचों के माध्यम से अपने हितों को आगे बढ़ाए और साथ ही वैश्विक शासन व्यवस्था में आवश्यक सुधारों की माँग को भी मजबूती से प्रस्तुत करे।[13]

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि भविष्य में भारत की विदेश नीति अधिक दूरदर्शी, लचीली और बहुआयामी स्वरूप ग्रहण करेगी। बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह राष्ट्रीय हितों, वैश्विक जिम्मेदारियों और बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित करता है। यदि भारत रणनीतिक स्वायत्तता, आर्थिक सशक्तिकरण और सक्रिय कूटनीति को निरंतर बनाए रखता है, तो उसकी विदेश नीति भविष्य में उसे एक सशक्त, प्रभावशाली और जिम्मेदार वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

सुझाव

- भारत को अपनी विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए बहु–संरेखण की नीति को और अधिक संस्थागत रूप प्रदान करना चाहिए। बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में किसी एक महाशक्ति पर अत्यधिक निर्भरता भारत के दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों के अनुकूल नहीं होगी।

- भारत की विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति को और अधिक सशक्त बनाए जाने की आवश्यकता है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार, विदेशी निवेश, ऊर्जा सुरक्षा और तकनीकी सहयोग के क्षेत्रों में दीर्घकालिक रणनीति अपनाकर भारत अपनी वैश्विक आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकता है।
- भारत को वैश्विक दक्षिण के नेतृत्व की अपनी भूमिका को और अधिक स्पष्ट तथा सक्रिय बनाना चाहिए। विकासशील देशों की समस्याओं, विकास आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर भारत वैश्विक शासन व्यवस्था में अधिक समावेशिता और संतुलन स्थापित करने में योगदान दे सकता है।[14]
- क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए भारत को अपनी विदेश नीति में समग्र सुरक्षा दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। पारंपरिक सैन्य सुरक्षा के साथ–साथ आतंकवाद, साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा और अंतरिक्ष सुरक्षा जैसे उभरते खतरों पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है।
- भारत को बहुपक्षीय मंचों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में अपनी सक्रियता को बनाए रखते हुए वैश्विक शासन सुधारों की माँग को निरंतर आगे बढ़ाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों की निर्णय–प्रक्रिया को अधिक प्रतिनिधिक, पारदर्शी और प्रभावी बनाने की दिशा में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है।
- भारत की विदेश नीति में सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति के उपयोग को और अधिक संगठित तथा रणनीतिक रूप दिया जाना चाहिए।
- जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में भारत को अपनी विदेश नीति में संतुलित और उत्तरदायी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। विकास आवश्यकताओं और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करते हुए अंतरराष्ट्रीय जलवायु प्रयासों में सक्रिय भूमिका निभाना भारत को एक जिम्मेदार वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर सकता है।[15]

इन सुझावों के प्रभावी क्रियान्वयन से भारत की विदेश नीति न केवल वर्तमान बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होगी, बल्कि भविष्य में भारत को एक सशक्त, संतुलित और प्रभावशाली वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने में भी सहायक सिद्ध हो सकती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उभरती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था ने भारत की विदेश नीति के स्वरूप, दृष्टिकोण और कार्यशैली में महत्वपूर्ण परिवर्तन को जन्म दिया है। शीतयुद्धोत्तर अंतरराष्ट्रीय परिवेश, वैश्वीकरण की प्रक्रिया, आर्थिक उदारीकरण और वैश्विक शक्ति–संतुलन में आए बदलावों ने भारत को अपनी पारंपरिक विदेश नीति से आगे बढ़कर अधिक व्यावहारिक, लचीली और रणनीतिक नीति अपनाने के लिए प्रेरित किया है। 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति अब केवल आदर्शवाद और सिद्धांतों पर आधारित न रहकर राष्ट्रीय हितों, रणनीतिक स्वायत्तता और बहु–संरेखण जैसे यथार्थवादी तत्वों पर केंद्रित हो गई है।अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत ने स्वयं को केवल एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में सीमित नहीं रखा, बल्कि वैश्विक राजनीति में एक सक्रिय और जिम्मेदार भूमिका निभाने का प्रयास किया है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की बढ़ती भागीदारी, वैश्विक दक्षिण के देशों के हितों की वकालत, आर्थिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर के प्रभावी उपयोग ने भारत की वैश्विक छवि को सुदृढ़ किया है। भारत ने अपनी विदेश नीति के माध्यम से यह संकेत दिया है कि वह सहयोग, संवाद और संतुलन के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय शांति और स्थिरता में योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जायसवाल, के. एल. (2018). भारत की विदेश नीति : सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली : पीयरसन इंडिया।

2. मिश्र, राजेश. (2020). अंतरराष्ट्रीय संबंध : एक समग्र अध्ययन. हैदराबाद : ओरिएंट ब्लैकस्वान।
3. सिन्हा, अरविंद. (2021). चीन का उदय और भारत की विदेश नीति की चुनौतियाँ. Journal of Strategic Studies and International Affairs 9(1), 29–44.
4. जैन, बी. एम. (2013). अंतरराष्ट्रीय संबंध. जयपुर : राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
5. सिन्हा, अरविंद. (2018). वैश्वीकरण और भारतीय विदेश नीति. नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन।
6. शुक्ला, ओ. पी. (2018). भारतीय विदेश नीति में सांस्कृतिक कूटनीति का महत्व. Indian Journal of Cultural Studies, 5(1), 73–88.
7. मिश्र, केदारनाथ. (2019). बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और भारत. नई दिल्ली : ज्ञानदीप प्रकाशन।
8. मल्होत्रा, रीना. (2019). बहुध्रुवीय विश्व में भारत की कूटनीतिक रणनीति. Indian Journal of Global Politics, 6(2), 55–69.
9. चौधरी, नरेश. (2020). भारत और वैश्विक दक्षिण. नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन।
10. शर्मा, विनोद. (2021). 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
11. सिंह, सुरेश कुमार. (2019). बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और भारत की विदेश नीति. Journal of Indian Political Science, 81(1), 97–112.
12. गुप्ता, बी. एल. (2016). गुटनिरपेक्षता से बहु–संरेखण तक : भारतीय विदेश नीति का विकास. Journal of South Asian Studies, 34(2), 189–203.
13. त्रिपाठी, दीपक. (2018). भारत की विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति की भूमिका- Indian Journal of Economics and Development, 14(1), 45–57.
14. सिंह, हरबंस. (2016). भारत–अमेरिका संबंध और बदलती विश्व व्यवस्था. Indian Journal of Political Science, 77(3), 389–402.
15. पाण्डेय, रमेश चन्द्र. (2020). अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भारत की भूमिका : एक विश्लेषण. Indian Journal of International Law 60(2), 241–260.

❑❑❑